आज फिर से औरत उठ खड़ी हो रही है वह अंधेरे को फाड़कर निकल रही है

आज फिर से औरत उठ
खड़ी हो रही है
वह अंधेरे को फाड़कर निकल रही है

समय की निर्मम शक्ति में से
उभरते हुए,
जो अपने शरीर में
अपने मन में
अंधेरे और आतंक को जानती है

हर युग में समय-समय पर हमारे यहां ऐसी औरतें हुई हैं जिन्होंने आज़ादी और आत्म-सम्मान के लिए निडरता के साथ संघर्ष किया जो व्यक्तिगत रूप से सामने आ खड़ी हुईं।

पिछले दिनों एक लहर आई है जैसा कि एक नज़र डालने से पता चलता है।

बंबई में राज्य विधान सभा के आगे प्रतिवाद करती हुईं
जुलूस में शामिल धुलिया की आदिवासी महिलाएं ।

केरल से लेकर कानपुर तक आर्थिक समानता के लिए
आंदोलनरत मजदूर वर्ग की महिलाएं ।

अपने अधिकारों के लिए
संघर्ष कर रहीं मध्यम वर्ग की महिलाएं
गृहिणियां, शिक्षिकाएं, क्लर्क और दूसरी
कामकाजी
औरतें

आवास के अधिकार के लिए
वैवाहिक अधिकार के लिए

उपभोक्ता के अधिकारों के लिए
ट्रेड यूनियन अधिकारों के लिए
मौलिक अधिकारों के लिए
पेयजल और शौचालय से लेकर
भोजन और आवास की मौलिक
सुविधाओं के अभाव जैसे मुद्दों
पर अपने को संगठित करती हुईं ।

चावल और तेल, चीनी और ईंधन
प्याज और दाल जैसी अनिवार्य
वस्तुओं की बढ़ती कीमतों के
खिलाफ़ अपने को संगठित करती हुईं ।

मद्रास की झोपड़-पट्टियों की
औरतें पेयजल की कमी के खिलाफ
खाली घड़ों को हाथ में लिए
सड़कों को जाम करती हुईं ।

गढ़ चिरौली की आदिवासी
महिलाएं इंचमपल्ली बांध और
उसके द्वारा उनका जीवन अस्त व्यस्त
किए जाने के खिलाफ़
प्रतिवाद करती हुईं ।

दिल्ली की अभिजात आधुनिक
कालेज छात्राएं अपने पुरुष साथियों
द्वारा किए गए अपमानजनक व्यवहार के खिलाफ़
विरोध करती हुईं ।

महिला पत्रकार अखबारों
और पत्र-पत्रिकाओं में महिलाओं के यौन
चित्रण के खिलाफ अभियान चलाती हुईं ।

महिला अधिवक्ताएं महिला कैदियों
के हालात का अध्ययन करने के लिए जेल में
जाने देने के लिए आंदोलन करती हुईं ।

मजदूर वर्ग की महिलाएं दारुबंदी
के क़ानूनों को सख्ती से लागू करने के लिए
सड़कों पर अभियान चलाती हुईं ।

शहरों में रोज आनेजाने वाली
महिलाएं बसों और उपनगरीय रेल गाड़ियों में औरतों से छेड़छाड़ करने वालों के प्रति
प्रशासनिक उदासीनता के खिलाफ प्रतिवाद करती हुईं ।

बारली जनजाति की महिलाएं
कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ
मिलकर प्रदर्शन करती हुईं ।

महिला संगठन संसद के समक्ष सख्त बलात्कार और
दहेज विरोधी कानून की मांग करते हुए।
दबानेवाले निजी कानूनों के खिलाफ़
काम की जगह पर भेद-भाव के खिलाफ़
पत्र-पत्रिकाओं में अश्लीलता के खिलाफ़
मर्यादा और व्यक्ति की गरिमा के लिए।

यूनियन कार्बाइड गैस कांड
से पीड़ित महिलाएं न्याय के लिए संसद के समक्ष आन्दोलन करती हुईं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाएं अपने हक़ों पर जोर देती हुईं।

महिलाएं नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए मुद्दों पर आधारित संघर्षों में पुरुषों के साथ मिलकर भाग लेती हुईं।

पर्यावरण रक्षा के लिए
साम्प्रदायिक हिंसा के खिलाफ़
शस्त्रीकरण (परमाणवीकरण) के खिलाफ़
महिलाओं के अधिकारों के लिए
मानवीय अधिकारों के लिए।

पिछले दो दशकों में मणिपुर से गुजरात तक, कश्मीर से केरल तक देखा गया है कि भारतीय समाज के हर स्तर की, हर क्षेत्र, वर्ग, जाति, धर्म और भाषा की महिलाएं—छात्राएं, मजदूर, आदिवासी, किसान, वृद्ध और तरुण, शहरी और ग्रामीण, शिक्षित और निरक्षर हर कोई अधिकाधिक परम्परा की सुरक्षा के दायरे से निकल कर आ रही हैं और समाज के नियमों को नया रूप देने के लिए, विरोध में खड़ी दुनिया का सामना कर रही हैं।

इन महिलाओं की आवाजें

हमारी सड़कों पर
हमारी अदालतों और विधान सभाओं में
हमारे अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में
हमारी विकासशील चेतना में गूंजने लगी हैं।

—चंद्रलेखा द्वारा बनाई 'स्त्री-कथा' नाम की प्रदर्शनी की
स्क्रिप्ट के कुछ अंश
साभार : जागोरी